Non Aligned Movement- NAM

Dr. Gobind Kr Paswan, HOD & Assistant Professor,
Dept. of History, R.C.S.College, Manjhaul ,Begusarai.
Lalit Narayan Mithila University Darbhanga .
Email Id- paswangobind.hist @gmail.com

'गुट निरपेक्ष आन्दोलन'

'गुट निरपेक्ष आन्दोलन' कई राष्ट्रों से बनी एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था है। यह विकसित देशों के हितों की तुलना में तृतीय विश्व के देशों की सामूहिक राजनीतिक और आर्थिक चिन्ताओं की अभिव्यक्ति के लिये एक मंच का कार्य करता है।

भूमिका

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् विश्व मुख्यतः दो गुटों- साम्यवादी सोवियत संघ और पूंजीवादी अमेरिका के मध्य बँटा हुआ था इस समय दोनों गुट एक-दूसरे से मुकाबला करने के लिये सामाजिक प्रणालियाँ तथा सैनिक गुट तैयार कर रहे थे। इसी समय वैश्विक पृष्ठभूमि पर बहुत सारे देशों को उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता मिली थी, भारत जैसे देश भी इसी श्रेणी में शामिल थे। उपनिवेशवाद से स्वतंत्र इन देशों ने स्वयं को दोनों समूहों से दूर रखते हुए एक समूह 'गुटनिरपेक्ष आंदोलन' की स्थापना की, इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य नवीन देशों के हितों की सुरक्षा करना था।

गुटनिरपेक्षता की ओर पहला अहम कदम बांडुंग सम्मेलन (वर्ष 1955) के माध्यम से उठाया गया जिसमें भारत के तात्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू, अब्दुल नासिर, सुकर्णो और मार्शल टीटो जैसे नेताओं ने प्रतिभाग किया। इस सम्मेलन में विश्व शांति और सहयोग संवर्द्धन संबंधी घोषणा पत्र जारी हुआ। गुटनिरपेक्ष आंदोलन का पहला सम्मेलन वर्ष 1961 में बेलग्रेड में आयोजित किया गया जिसमें जवाहरलाल नेहरू, यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति सुकर्णो, मिस्र के राष्ट्रपति कर्नल नासिर, घाना के राष्ट्रपति क्वामे एन्क्रूमा जैसे नेताओं ने भाग लिया।

वर्तमान में गुटनिरपेक्ष आंदोलन संयुक्त राष्ट्र के बाद विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक समन्वय और परामर्श का मंच है। इस समूह में 120 विकासशील देश शामिल हैं। इसके अतिरिक्त इस समूह में 17 देशों और 10 अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को पर्यवेक्षक का दर्जा प्राप्त है।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन की मुख्य विशेषताएं:-

गुटनिरपेक्षता की नीति पंचशील के पांच सिद्धांतों पर आधारित थी, जिसने अंतर्राष्ट्रीय आचरण को निर्देशित किया था। 1954 में इन सिद्धांतों की परिकल्पना की गई थी जो निम्नलिखित थे –एक दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता के लिए परस्पर सम्मान; एक दूसरे के सैन्य और आंतरिक मामलों में गैर-हस्तक्षेप; आपसी असहमति; समानता और पारस्परिक लाभ और अंत में, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और आर्थिक सहयोग।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन का मुख्य उद्देश्य

- शीत युद्ध की राजनीति का त्याग करना।
- स्वतंत्र अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का अनुसरण।
- सैन्य गठबंधनों से पर्याप्त दूरी।
- शांतिपूर्ण साधनों के माध्यम से शांति, निरस्त्रीकरण और विवाद समाधान के प्रयासों की जारी रखना।
- साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का विरोध।
- रंगभेद की नीति के विरुद्ध संघर्ष की निरंतरता।
- मानवाधिकारों का की रक्षा।

गुटनिरपेक्ष आंदोलन का वर्तमान प्रासंगिकता

- गुटनिरपेक्ष आंदोलन का मुख्य उद्देश्य शीत युद्ध के दौरान नवीन स्वतंत्र देशों के हितों की रक्षा करना था।
- जलवायु परिवर्तन को लेकर विभिन्न देशों के मध्य विवाद।
- विश्व में गुटबाज़ी की वजह से कई क्षेत्रों में संघर्ष जैसे- मध्य पूर्व खाड़ी देश अफगानिस्तान।
- शरणार्थी समस्या (रोहिंग्या और मध्य-पूर्व)।
- एशिया- प्रशांत क्षेत्र में शक्ति संतुलन हेतु टकराव की स्थिति।
- आतंकवाद का मुद्दा।
- नव साम्राज्यवाद के तहत राजनीतिक कूटनीति।
- ऋण जाल (Debt Trap) की राजनीति।
- साइबर हमले और अंतरिक्ष के प्रयोग की अंधाधुंध प्रतिस्पर्द्धा

गुटनिरपेक्ष आंदोलन के संस्थापक

आंदोलन ने विकासशील देशों के हितों और प्राथमिकताओं का प्रतिनिधित्व किया। 1955 में इंडोनेशिया के बांडुंग में आयोजित एशिया-अफ्रीका सम्मेलन में इस आंदोलन की शुरुआत हुई।

XVI SUMMIT OF THE NON-ALIGNED MOVEMENT

TEHRAN, 26-31 AUGUST 2012

Thank You!